REET 2025
LEVEL-1&2
वंदन बैच
संस्कृत
कारक तथा विभक्ति परिचय
Part -3
LIVE
02-02-2025 09:00 AM

कारक-विभक्ति (भाषा प्रथम व भाषा द्वितीय दोनों के लिए

वाक्य में क्रिया की सिद्धि करने वाले को अथवा क्रिया के साथ जिसका सम्बन्ध होता है, उसे कारक कहते हैं। वाक्य में संज्ञा, सर्वनाम आदि का क्रिया के साथ सम्बन्ध रहता है, इसलिए उसको कारक कहते हैं।

जैसे- मोहनः गृहं गच्चति।

यहाँ मोहन और गृह का सम्बन्ध गच्छति क्रिया से है। इसलिए ये दोनों शब्द कारक हैं।

जिन शब्दों का क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं होता है, उन्हें कारक नहीं कहते हैं।

जैसे- रामः मोहनस्य पुस्तकं पठति।

यहाँ पर मोहन का क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं है इसलिए यह कारक नहीं है। क्योंकि षही को कारक नहीं माना है।

कारक की परिभाषा

क्रियान्वित्वं कारकत्वम्

क्रिया के जनक को कारक कहते हैं।

क्रियान्वित्वं कारकत्वम् :

अन्बय का अर्थ होता है, सम्बन्ध। जिसका क्रिया के साथ साक्षात् या परम्परा से सम्बन्ध होता है अथवा जिसका क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध हो, उसे कारक कहते हैं।

क्रियानिष्पादकत्वं कारकत्वम् :

क्रिया का सम्पादन करने वाला कारक कहलाता है।

संस्कृत व्याकरण के अनुसार क्रिया के साथ संबंध रखने वाले निम्नलिखित 6 कारक हैं।

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।

अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट्।।

इस प्रकार कर्ता, कर्म, करण, सम्प्र्रदान, अपादान, अधिकरण, कारक ही कारकों में शामिल हैं, सम्बन्ध एवं सम्बोधन कारक को मुख्य कारकों की श्रेणी में नहीं रखा गया है क्योंकि सम्बन्ध कारक का क्रिया के साथ साक्षात् सम्बन्ध नहीं होता है। अतएव उसे "उपपद विभक्ति"' कहा जाता है।

इसी प्रकार सम्बोधन भी कारक नहीं होता है क्योंकि सम्बोधन को प्रथमा विभक्ति में शामिल किया गया है।

कारक का सामान्य परिचय

1 **कर्ता-** क्रिया को करने वाले को कर्ता कहते हैं।

2 **कर्म-** किसी क्रिया का कर्ता जिस वस्तु की सबसे अधिक इच्छा रखता है, उसे कर्म कारक कहते हैं।

3 **करण-**जिस पदार्थ की सहायता से कर्ता अपना कार्य पूरा करता है, उसे करण कारक कहते हैं।

4 **सम्प्रदान-** दान आदि क्रिया जिसे दी जाती है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। .

5 **अपादान-** जिससे कोई वस्तु अलग हो, उसे अपादान कारक कहते हैं।

6 सम्बन्ध- दो वस्तु या व्यक्तियों के सम्बन्ध का बोध कराने वाले को सम्बन्ध कारक कहते हैं।

7 अधिकरण- किसी क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं।

8 सम्बोधन- किसी को पुकारने, सम्बोधन या ध्यान आकृष कराने के लिए सम्बोधन कारक का प्रयोग किया जाता है।

कारकों के नाम व चिन्ह

विभक्ति	कारक	कारक का पहचान चिन्ह
प्रथमा	कर्ता	ने (x)
द्वितीया	कर्म	को (x)
तृतीया	करण	से, के द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए (को)
पंचमी	अपादान	से, अलग होकर
षष्ठी	सम्बन्ध	का, के. की, रा, रे, री, ना, ने नी
सप्तमी	अधिकरण	में, पे, पर, भीतर, अन्दर
सम्बोधन	सम्बोधन	हे, अरे, ओ, भो अयि, अरे!

कर्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

1. प्रातिपदिकार्थलिङ्ग परिमाण वचनमात्रे प्रथमा-

प्रातिपदिक (किसी व्यक्ति या जाति) का अर्थ बताने के लिए लिङ्, (पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसक लिङ्ग) परिमाण (नाप, वजन) तथा वचन (एकवचन, द्विवचन, बहुवचन) और मात्रा बतलाने के लिए प्रथमा विभक्ति (कर्ताकारक) का प्रयोग किया जाता है।

• **प्रातिपदिकार्थ में:** शब्द में जब तक कोई विभक्ति नहीं लगती, तब तक वह प्रातिपदिक रहता है। इसलिए व्याकरण की दृष्टि से उसका अर्थ बतलाने के लिए प्रथमा विभक्ति लगती है।

जैसे- रामः, ज्ञानम्, श्रीः

• लिङ्ग मात्र में किसी शब्द का लिङ्, बतलाने के लिए प्रथमा विभक्ति लगती है।

जैसे-

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
तटः	तटी
नपुंसकलिङ्ग	तटम्

परिमाण में: नाप या वजन बतलाने में प्रथमा होती है जैसे- द्रोणो व्रीहिः।

वचन मात्र में : एक वचन, द्विवचन और बहुवचन आदि संख्या को बतलाने के लिए प्रथमा विभक्ति लगती है।

जैसे- एक द्वौ, बहवः ।

सम्बोधने च सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। हे

राम+सु

हे राम। हे कृष्णौ! हे रमे !

कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति)

जिस वस्तु के लिए कर्ता क्रिया को करता है उसे कर्म कहते हैं।

कर्ता अपनी क्रिया से जिस पदार्थ को प्राप्त करने की अधिक इच्छा रखता है वह कर्म संज्ञक होता है।

कर्तुरीप्सिततमं कर्म: कर्तुः ईप्सिततमम्

कर्ता के लिए जो सबसे अधिक इच्छित वस्तु होती है, उसकी कर्म संज्ञा होती है।

जैसे-

(i) भक्त: हरि भजति ।

यहाँ भक्त कर्ता है। कर्ता अपनी क्रिया से हरि को चाहता है। अत: हरि शब्द की कर्म संज्ञा है। और उसमें कर्मणि द्वितीया से द्वितीया विभक्ति होती है।

(ii) पयसा ओदनं भुङ्क्ते ।

यहाँ कर्ता के लिए भोजन क्रिया से ओदनं (भात) सबसे अधिक इच्छित है।
यद्यपि वह दूध भी प्राप्त करना चाहता है लेकिन दूध भोजन क्रिया में साधन है।
अत ओदन की कर्म संज्ञा होती है, उसमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

अकथितं च :

अपादन आदि विशेष कारकों से अविवक्षित (कर्ता जिसे कहना नहीं चाहता है) कारक कर्म संज्ञक होता है। इसका अभिप्राय यह है कि जहाँ अपादान आदि का अर्थ प्रकट होता है लेकिन कहने वाला उसका प्रयोग नहीं करना चाहता है। तथा कर्म का ही प्रयोग करना चाहता है। वहाँ उस कारक की कर्म की संज्ञा होती है। इस सूत्र से जो कार्य होता है, उसे गौण या अप्रधान कर्म कहते हैं।

यह नियम दुह, याच्, पच् आदि सोलह द्विकर्मक धातुओं पर होता है।

द्विकर्मक धातुओं में अपादान, करण, सम्प्रदान, अधिकरण इन चारों के शब्दों की कर्म संज्ञा होती है। ये चारों गौण कर्म कहलाते हैं।

REET 2025 L - 1&2 संस्कृत वंदन बैच

द्विकर्मक क्रियाएँ- दुह (दुहना)। याच् (मांगना), अथवा भिक्ष (मांगना), पच् (पकाना), दण्ड् (दण्ड देना), रुध् (रोकना), प्रच्छ (पूछना), चि (चुनना) ब्रू अथवा भाष् (बोलना), शास् (शासन करना) जि (जीतना), मथ् (मथना), मुष् अथवा चुर् (चुराना) नी (ले जाना) है (हरण करना), कृष् (खींचना) वह (ले जाना) ये सोलह द्विकर्मक (दो कर्म वाली) क्रियाएँ हैं। अर्थात् इन क्रियाओं के योग में दो बार द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। •

माता धेनुं दुग्धं दोग्धि-

यहाँ धेनु सामान्यत: अपादान कारक है लेकिन कर्ता के लिए यह अपादान कारक के रूप में विवक्षित नहीं है अपितु दूध रूप कर्म के हेतु रूप में विवक्षित है। अत: दुह धातु के योग में धेनु की कर्म संज्ञा होती है।

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

- सेवक: नृपं क्षमां याचते भिक्षते वा। (सेवक राजा से क्षमा मांगता है)
- माता तण्डुलान् ओदनं पचति। (माता चावलों से भात पकाती है)
- नृप दुर्जनं शतं दण्डयति। (राजा दुर्जन पर सौ रुपए का दण्ड लगाता है)
- कृष्ण व्रजं गां रुणद्धि। (कृष्ण ब्रज में गाय को रोकता है)
- शिष्य: गुरुं धर्मं प्रच्छति। (शिष्य गुरु से धर्म को पूछता है)
- मालाकार: लतां पुष्पाणि चिनोति। (माली लता से फूलों को चुनते हैं)
- शिक्षक: छात्रं धर्मं ब्रूते भाषते वा। (शिक्षक छात्र से धर्म कहता है)
- जनक: पुत्रं धर्मं शास्ति। (पिता पुत्र को धर्म बताता है)

- मोहनः रामं शतं जयति। (मोहन राम से सौ रुपए जीतता है)
- हरिः सागरं सुधां मथ्नाति। (हरि समुद्र से अमृत मथता है)
- रामः देवदत्तं शतं मुष्णाति वा। (राम देवदत्त से सौ रुपए चुराता है)
- कृषकः ग्रामम् अजां नयति। (किसान गाँव में बकरी ले जाता है)
- ग्रामं भारं वहति (गाँव में बोझा ले जाता है)

(3) अधिशीङ्स्थासां कर्मः

(अधि शीङ्:, स्था, आस्) अधि उपसर्ग पूर्वक शीङ् (सोना) स्था (ठहरना) एवं आस् (बैठना) धातु के आधार की कर्म संज्ञा होती है। अर्थात् सप्तमी विभक्ति के अर्थ में द्वितीया विभक्ति होती है।

जैसे- हरिः वैकुण्ठं अधिशेते ।

वयं धर्मशालां अधितिष्ठामः ।

सः धर्मशालां अध्यास्ते। (अधि+आस्)

छात्राः कक्षां अध्यास्ते। (अधि+आस्)

अधि + शीङ्/स्था/आस् = कर्म (आधार)

अधिशेते अधितिष्ठति अध्यास्ते

हरिः वैकुण्ठे शेते नृपः सिंहासने तिष्ठति

हरिः वैकुण्ठं अधिशेते नृपः सिंहासनं अधितिष्ठति

अधि शीङ्
अधि स्था
अधि आस्

सप्तमी ← आधार
कर्म ← द्वितीया

हरिः वैकुण्ठे शेते ।
हरिः वैकुण्ठं अधिशेते

छात्राः कक्षायाम् आसते ।
छात्राः कक्षाम् अध्यासते

मुनिः आसने तिष्ठति
मुनिः आसनं अधितिष्ठति

4) उपान्वध्याङ्वसः

वस् (निवास करना) धातु से पहले यदि उप, अनु, अधि, आङ् (आ) उपसर्ग लग जाये तो इसके आधार की कर्म संज्ञा होती है।

जैसे- हरिः वैकुण्ठम् उपवसति।

हरिः वैकुण्ठम् अनुवसति।

हरिः वैकुण्ठम् अधिवसति

हरिः वैकुण्ठम् आवसति।

(हरि वैकुण्ठ में निवास करता है)

उप अनु अधि आङ् + वस

उपवसति
अनुवसति
अधिवसति
आवसति

अहं गृहे वसामि
अहं गृहं उपवसामि

हरिः वैकुण्ठे वसति ।

हरिः वैकुण्ठं उपवसति / अनुवसति / अधिवसति

आवसति

(5) अभितः परितः समयानिकषा हा प्रतियोगेऽपि

अभितः (दोनों ओर) परितः (चारों ओर), समया, निकषा (निकट) हा (अफसोस) और प्रति (ओर) के योग में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

प्रयागम् अभितः नद्यौ स्तः। (प्रयाग के दोनों ओर से नदी है) विद्यालयं अभितः राजमार्गः आस्ते

ग्रामं परितः क्षेत्राणि सन्ति। (गाँव के चारों ओर खेत हैं)

ग्रामं समया पाठशाला अस्ति। (गाँव के समीप पाठशाला है)

ग्रामं निकषा उपवनं अस्ति। (गाँव के समीप उपवन है)

हा शठम्। (शठ के प्रति अफसोस)

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

कृष्णं न प्रतिभाति (कृष्ण को अच्छा नहीं लगता है)

रामः आपणं प्रति गच्छति ।

(6) कालाऽध्वानोरत्यन्त संयोगः

काल+अध्वानोः अत्यन्त संयोग

समय मार्ग लगातार

ऐसा कालवाचक और मार्गवाचक शब्द जहाँ लगातार का अर्थ हो, तो इन दोनों शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति आती है।

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

काल वाचक :

मासम् अधीते। (पूरे महीने भर पढ़ता है)

मासं गुडधानाः। (महीने भर तक गुड मिश्रित धान्य खाता है)

मासं कल्याणी। (महीने भर कल्याणकारी है)

मार्गवाचक :

क्रोशं कुटिला नदी। (नदी कोश भर तक टेढ़ी है)

क्रोशम् अधीते। (कोशभर तक अध्ययन करता है)

क्रोशं गिरिः। (कोश भर तक निरन्तर पर्वत है)

करण कारक (तृतीया विभक्ति)

करण कारक :

क्रिया के करने में कर्ता का जो सबसे अधिक सहायक होता है, उसे करण कारक कहते हैं।

जैसे- मैं हाथ से खाता हूँ। अहम् हस्तेन खादामि।

हम लोग आँखों से देखते है। वयं नेत्राभ्याम् पश्यामः।

(1) साधकतमं करणम्

क्रिया की सिद्धि में जो कारक अत्यधिक सहायक होता है, उसकी करण संज्ञा होती है।

साधकतमं का अर्थ है- सबसे अधिक सहायक या श्रेष्ठ उपकारक।

अतः जिस पदार्थ की सहायता से कर्ता अपना कार्य पूरा करता है, उसे करण कारक कहते हैं तथा इसमें तृतीया विभक्ति होती है। जैसे-(1)

- रामः जलेन मुखं प्रक्षालयति। (राम जल से मुख धोता है)

कृषकः हलेन कर्षति। (कृषक हल से खेत जोतता है)

(2) कर्तृकरणयोस्तृतीया-

कर्मवाच्य, भाववाच्य

अनुक्त कर्ता और करण में तृतीया विभक्ति होती है। जहाँ कर्मवाच्य और भाववाच्य का प्रयोग होता है वहाँ कर्ता अनुक्त होता है और ऐसी स्थिति में ही कर्ता और करण में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

जैसे - रामेण बाणेन हतो बालिः

(i) यहाँ कर्मवाच्य का प्रयोग किया गया है। अतः कर्ता राम अनुक्त है इसलिए इस सूत्र से राम शब्द में तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

प्रधान/उक्त | अप्रधान/अनुक्त

કર્તૃવાચ્ય — કર્તા ⇒ પ્રથમા, કર્મ ⇒ દ્વિતીયા, ક્રિયા - કર્તાનુસારી

કર્મવાચ્ય — કર્તા ⇒ તૃતીયા, કર્મ ⇒ પ્રથમા, ક્રિયા ⇒ કર્માનુસારી

ભાવવાચ્ય — કર્તા ⇒ તૃતીયા, ક્રિયા - પ્રધાન છે.

અનુક્ત / અપ્રધાન

રામ: રાવણં બાણેન હતવાન્

(રામ: → પ્રથમા; રાવણં → કર્મ; બાણેન → કરણ - તૃતીયા; હતવાન્ → ભૂતકાળ)

રામેણ રાવણ: બાણેન હત:

(રામેણ → તૃતીયા; રાવણ: → કર્મ; હત: → કર્ત)

(ii) यहाँ मारने का साधन बाण है इसलिए "साधकतमं करणम्" इस सूत्र से करण संज्ञा हुई और "कर्तृकरणयोस्तृतीया" इस सूत्र से तृतीया विभक्ति का प्रयोग किया गया है।

इसी प्रकार-

मया पुस्तकं पठ्यते। (मेरे द्वारा पुस्तक को पढ़ा जाता है।)

शीलया सुप्यते । (शीला सोती है।)

कर्म प्रधान - प्रथमा - कर्मवाच्य
कर्म - अप्रधान - द्वितीया कर्तृवाच्य
कर्ता → प्रथमा → कर्तृवाच्य
कर्ता ⇒ तृतीया → कर्मवाच्य और भाव...

कर्तृवाच्य कर्मवाच्य भाववाच्य

कर्ता प्रधान कर्म भाव

रामः विद्यालयं गच्छति

मयूरः नृत्यति

कर्मवाच्य

रामेण विद्यालयः गम्यते

मयूरेण नृत्यते ।

भाववाच्य...

सीता कलमेन पत्रं लिखति

छात्रः बसयानेन विद्यालयं गच्छति

3. सहयुक्तेऽप्रधाने :-

सह, साकम्, सार्धम् समं (साथ) अर्थ के योग में अप्रधान कर्ता (वाक्य के प्रधान कर्ता का साथ देने वाला) में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

जैसे- पुत्रेण सह आगतः पिता।

रामेण सह सीता वनं गच्छति।

↓ ↓

अप्रधान कर्ता प्रधानः कर्ता

यहाँ पिता प्रधानकर्ता है और पुत्र अप्रधान कर्ता है। अतः सह के योग में "सहयुक्तेऽप्रधाने" इस सूत्र से पुत्र में तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

इसी प्रकार-

(1) रामेण सह सीता वनम् अगच्छत् ।

(2) गुरुणा सार्धं शिष्य गच्छति।

(3) जनन्या समं पुत्री अगच्छत्।

(4) छात्रेण सार्धं शिक्षकः पठति ।

(4) अपवर्गे तृतीया : (अपवर्ग- फलप्राप्ति)

जहाँ फल प्राप्ति की चर्चा हो ऐसे कालवाचक और मार्गवाचक शब्दों में अत्यन्त संयोग होने पर तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे-

मासेन अधीतः ग्रन्थः । **क्रोशेन** पाणिनीया शिक्षा।

अहना **क्रोशेन** का अनुवाकः अधीत। (अनुवाक :- वेद का एक खण्ड)

सप्तभिः दिनैः रचितवान् ।

(5) येनाङ्गविकार :

जिस अंग के विकार युक्त होने से व्यक्ति का विकार दिखाई दे उस विकृत अंग में वाचक शब्द से तृतीया विभक्ति होती है।

विकार वाचक शब्द : अन्धः अन्धा, बधिरः बहरा, मूकः गूंगा, खल्वाटः गञ्जा, पङ्गुः लगड़ा, खञ्जः लगड़ा, कुब्जः कुबड़ा, लुञ्जः = टोटा आदि।

धृतराष्ट्र नेत्राभ्याम् अन्धः आसीत्। (धृतराष्ट्र नेत्रों से अन्धे थे।)

सः पादेन खञ्जः अस्ति। (वह पैर से लंगड़ा है।)

सः शिरसा खल्वाटः अस्ति। (वह सिर से गञ्जा है।)

देवदत्तः अक्ष्णा काणः। (देवदत्त आँख से काणा है।)

बालकः कर्णेन बधिरः वर्तते। (बालक कान से बहरा है।)

सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

(1) कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् -

दान के कर्म द्वारा जिसे इष्ट या भोक्ता बनाया जाता है, उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है। अर्थात् जिसको सम्यक् प्रकार से दान दिया जाए अथवा जिसके उद्देश्य से कोई वस्तु दी जाए उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है। दान आदि क्रिया जिसके लिए की जाती है, उसे सम्प्रदान कहते हैं।

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

राजा विप्राय गां ददाति। (राजा ब्राह्मण के लिए गाय देता है।)

याचकाय वस्त्रं ददाति। (याचक को वस्त्र देता है।)

(2) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः

रुचि अर्थ वाली धातुओं के प्रयोग से प्रसन्न होने वाले व्यक्ति की सम्प्रदान संज्ञा होती है। जिसे वस्तु अच्छी लगती है, उस व्यक्ति में चतुर्थी आती है, और जो वस्तु अच्छी लगती है उसमें प्रथमा ही होती है।

रुच् धातु के दो अर्थ होते हैं (1) दीप्तिः

बालकाय मोदकं रोचते

मह्यं चाकलेटं रोचते

तुभ्यं ओदनं रोचते

(2) अभिप्रीतिः अर्थ वाली रुच् धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है।

हरये रोचते भक्तिः। (हरि को भक्ति अच्छी लगती है।)

यहाँ रुच् धातु के योग

(अभिप्रीति अर्थक) प्रसन्न होने वाला हरि है, अतः हरि शब्द में चतुर्थी विभक्ति है।

शिशवे क्रीडनकं रोचते। (बच्चे को खिलौना अच्छा लगता है।)

बालकाय मोदकं रोचते। (बालक को लड्डू अच्छा लगता है।)

• रुच् धातु के समान अर्थ वाली स्वद् धातु भी है इसके योग में प्रसन्न होने वाले में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

• बालकाय मोदक स्वदते। (बालक को लड्डू अच्छा लगता है।)

• गोपालाय दुग्धं स्वदते। (गोपाल को दूध अच्छा लगता है।)

(3) क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोप –

क्रुध् (क्रोध करना), द्रुह (द्रोह करना), ईर्ष्या (किसी की उन्नति को सहन नहीं करना), असूय (गुणों में दोष ढूंढना/जलन करना) धातुओं के योग में तथा इन धातुओं के समान अर्थ वाली अन्य धातुओं के योग में जिसके ऊपर क्रोध आदि किया जाता है, उसकी सम्प्रदान संज्ञा होने से उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-

- स्वामी सेवकाय क्रुध्यति कुप्यति वा। (स्वामी सेवक पर क्रोध करता है।)
- दुर्जनः सज्जनाय द्रुहयति । (दुर्जन सज्जन से द्रोह करता है।)
- राक्षसः हरये ईर्ष्याति। (राक्षस हरि से ईर्ष्या करता है।)

- दुर्योधनः युधिष्ठिराय असूयति। (दुर्योधन युधिष्ठिर से जलन करता है।)

लेकिन अभि, अधि और सम् उपसर्ग पूर्वक कुध, द्रुह, धातु के साथ द्वितीया विभक्ति ही होती है।

राक्षसः रामाय क्रुध्यति

राक्षसः रामम् अभिक्रुध्यति ।

पिता पुत्रं संक्रुध्यति ।   (पिता पुत्र पर क्रोध करता है।)

पिता पुत्राय कुध्यति

(4) नमः स्वस्ति स्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च -नमः (नमस्कार), स्वस्ति (कल्याण आशीर्वाद), स्वाहा (देवताओं को उद्देश्य बताना), स्वधा (पितरों को देना), अलम् (पर्याप्त/समर्थ), वषट् (देवताओं का आहुति) इनके योग में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-

- श्री गणेशाय नमः। (गणेशजी के लिए नमस्कार हो)
- स्वस्ति भवते । (आपका कल्याण हो)
- अग्नये स्वाहा। (अग्नि के लिए आहुति)
- पितृभ्यः स्वधा । (पितरों के लिए हवि का दान)

इन्द्राय वषट्। (इन्द्र के लिए हवि का दान)

• दैत्येभ्यः हरिः अलं। (दैत्यों के लिए हरि पर्याप्त है)

यहाँ अलम् पर्याप्त अर्थ में है इसलिए इसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

अपादान कारक (पंचमी विभक्ति)

जिस स्थान से कोई वस्तु या व्यक्ति अलग हो तो उस स्थान में पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

- ध्रुवमपायेऽपादानम् -

ध्रुवम्- अवधि भूत सीमा

अपाये- पृथक्, विभाग, विश्लेषण, वियोग, अपाय की सिद्धि में ध्रुव की अपादान संज्ञा होती है। अर्थात् किसी वस्तु या व्यक्ति के अलग होने में जो कारक स्थिर होता है अर्थात् जिससे वस्तु अलग होती है, उसकी अपादान संज्ञा होती है।

- बालकः ग्रामात् आगच्छति। (बालक गाँव से आता है।)
- वृक्षात् पत्रं पतति । (वृक्ष से पत्ता गिरता है।)
- मेघात् विद्युत् विद्योतते । (बादल से बिजली चमकती है।)

(2) भीत्रार्थानां भयहेतु -

भी (डरना) त्रै (रक्षा करना) भयार्थक रक्षार्थक धातुओं के योग में भय के हेतु की अपादान संज्ञा होती है। जिससे डरेगा और जिससे रक्षा करेगा उसकी अपादान संज्ञा होती है।

- बालकः चौरात् बिभेति।
- नृपः दुष्टात् रक्षति/त्रायते।

(3) जनिकर्तुः प्रकृति -

जनि उत्पत्ति का आश्रय कर्तु उत्पन्न होने वाला कर्ता प्रकृति = हेतु उत्पन्न होने वाले का हेतु अपादान संज्ञक होता है अर्थात् जिससे उत्पन्न होगा उसकी अपादान संज्ञा होती है

- ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते। (ब्रह्मा से प्रजा उत्पन्न होती है।)
- कामात् क्रोधः जायते। (काम से क्रोध उत्पन्न होता है।)
- गोमयात् वृश्चिकः जायते। (गोबर से बिच्छू उत्पन्न होता है।)
- मुखादग्निरजायत। (मुख से अग्नि पैदा हुई।)m

(4) भुवः प्रभव -

भुवः - प्रकट होना

प्रभवः प्रथम उत्पत्ति स्थान

उद्गम स्थान (प्रथम प्रकाश स्थान) की अपादान संज्ञा होती है। जैसे-

- हिमालयात् गंगा प्रभवति। (हिमालय से गंगा निकलती है।)
- वृक्षात् पत्राणि प्रभवन्ति। (वृक्ष से पत्ते निकलते हैं।)
- काश्मीरात् वितस्तानदी प्रभवति। (काश्मीर से वितस्ता नदी निकलती है।)
- यज्ञात् भवति पर्यजन्यः। (यज्ञ से वर्षा उत्पन्न होती है।)

सम्बन्ध कारक (षष्ठी विभक्ति)

जहाँ एक शब्द का सम्बन्ध दूसरे शब्द के साथ प्रकट होता है। उसे सम्बन्ध कारक हते हैं। सम्बन्ध कारक में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है।

(1) षष्ठी शेषे -

शेष का अर्थ है- जो कहा जा चुका है। उनसे बचा हुआ अर्थात् जो अन्य कारकों से बचा हुआ है तथा जहाँ स्व और स्वामी का सम्बन्ध है, उस सम्बन्ध को प्रकट करने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है।

अर्थात् कारक और प्रातिपदिक अर्थ से भिन्न स्व-स्वामी भाव सम्बन्ध शेष कहलाते हैं, वहाँ षष्ठी विभक्ति होती है।

सम्बन्ध सामान्य में पष्ठी विभक्ति होती है।

जैसे- राज्ञः पुरुष:स्व-स्वामी भाव सम्बन्ध

यहाँ राजा स्वामी है और पुरुष स्व (सेवक) है। अतः स्व-स्वामी भाव सम्बन्ध है अतः राजन् शब्द से षष्ठी विभक्ति होती है।

सम्बन्ध :

(1) स्व-स्वामी भाव सम्बन्ध राज्ञः पुरुषः

(2) जन्य-जनक भाव सम्बन्ध जन्य उत्पन्न होने वाला

जनक उत्पन्न करने वाला

राजकुमारः दशरथस्य पुत्रः

(3) अवयव अवयवीभाव सम्बन्ध अङ्ग अङ्गी भावसम्बन्ध

मम हस्ती पशुपाद

(4) स्थानी आदेश सम्बन्ध 'इको यणचि' यहाँ इक्स्थानी है अण आदेश है।

(5) आधार आधेयभाव सम्बन्ध आश्रय-आश्रित सम्बन्ध

वृक्षस्य शाखा

आधार आधेय

(2) कर्तृकर्मणोः कृति -

कृत् प्रत्यायान्त शब्दों के योग में उनके अनुक्त कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है।

जैसे-

क्तिन् - कृ + क्तिन् कृतिः

ल्युट् - पठ् + ल्युट् = पठनम् घञ् (अ) पठ् घञ् पाठः

तृच् - (तृ) - कृ तृच् कर्ता

वुल् - कृ - ण्वुल् = कारकः पाठकः

क्तिन् + भू = भूति
ल्युट् + पठ् = पठनम्
तृच् + जि = जेतृ
ण्वुल् + कृ = कारक

लघु + तमप् = लघुतमम्
कुसुम + इतच् = कुसुमित

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

(1) जैसे- कृष्णस्य कृतिः (कृष्ण की रचना) यहाँ कृति (कृ + क्तिन्) कृदन्त के योग में अनुक्त कर्ता कृष्ण में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

(2) जगतः कर्ता कृष्णः ।

(कृ + तृच्)

अस्य बालकस्य पठनं मह्यं रोचते।

(पठ + ल्युट्)

अस्य बालकस्य पाठः मह्यं रोचते।

(पठ् + घञ्)

अस्य संसारस्य कारकः ईश्वरः अस्ति।

(कृ + ण्वुल्)

इसी प्रकार :

रामस्य गतिः।

बालकानां रोदनम्।

विषस्य भोजनं।

अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)

जिस स्थान पर क्रिया होती है या क्रिया का जो आधार होता है, उसमें सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

हम सब इस कक्षा में पढ़ते हैं।

वयं कक्षायां पठामः

वयम् अस्यां कक्षायां पठामः।

बालक खेल के मैदान में खेल रहे हैं।

बालकाः क्रीडाक्षेत्रे क्रीडन्ति

बालकाः क्रीडाक्षेत्रे क्रीडन्ति/खेलन्ति ।

(1) आधारोऽधिकरणम् -

कर्ता और कर्म के द्वारा उनमें स्थित क्रिया का आधार अधिकरण कहलाता है। अधिकरण क्रिया का आधार नहीं होता है। क्रिया के साक्षात् आधार तो कर्ता और कर्म ही होते हैं। लेकिन उनके आधार को भी परम्परा से क्रिया का आधार मान लिया जाता है।

आधार तीन प्रकार का होता है-

(1) औपश्लेषिक: (श्लेष संयोग आदि सम्बन्ध) जहाँ कर्ता अथवा कर्म आधार में संयोग आदि सम्बन्ध से रहते हैं, वहाँ औपश्लेषिक आधार होता है। सः कटे आस्ते। (वह चटाई पर बैठता है)

यहाँ कर्ता का आधार कट है, उसके साथ कर्ता का संयोग सम्बन्ध है अतः इस सूत्र से कट की अधिकरण संज्ञा होती है।

(2) वैषयिक:

विषय के सम्बन्ध में होने वाला आधार वैषयिक आधार कहलाता है। रामस्य मोक्षे इच्छास्ति ।

यहाँ कर्ता को मोक्ष के विषय में इच्छा है। यहाँ इच्छा रूप क्रिया का आधार मोक्ष विषय है। अतः मोक्ष की अधिकरण संज्ञा होती है।

(3) अभिव्यापक आधार :

जिसमें कोई वस्तु समस्त अवयवों में व्याप्त होकर रहती है।

जैसे- सर्वस्मिन् आत्मास्ति। (पुल्लिंग) (आत्मा सबमें व्यापक है) अतः यहाँ सर्व शब्द की अधिकरण संज्ञा होती है। तिलेषु तैलम् । माता स्थाल्यां ओदनं पचति। औपश्लेषिक

(2) यतश्च निर्धारणम् -

बालकानां / बालकेषु रामः श्रेष्ठः

यतः (यत् + तस्) जिससे

निर्धारणम्- किसी समुदाय से पृथक्करण जाति, गुण, क्रिया तथा संज्ञा आदि की विशेषता के कारण किसी वस्तु को अपने समुदाय से जब अलग किया जाता है तो उस समुदायवाचक शब्द से षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है।

गुणवाचक शब्द में तमप् या इष्ठन् प्रत्यय का प्रयोग होता है और कर्ता यदि पुल्लिंग हो तो तमः स्त्रीलिंग हो तो तमा और नपुंसकलिंग हो तो तमम् होता है।

कवीनां / कविषु कालिदासः श्रेष्ठः

- कवीनां/कविषु कालिदासः श्रेष्ठः अस्ति ।

यहाँ कालिदास को गुणों के आधार पर कवि समुदाय से अलग किया गया है।

- गावां/गोषु कृष्णा बहुक्षीरा।

(गायों में काली गाय बहुत दूध देने वाली होती है।) यहाँ गुणवाचक कृष्णा शब्द द्वारा गो समुदाय से एक को पृथक् किया गया है अतः गो शब्द में षष्ठी अथवा सप्तमी विभक्ति होती है।

- छात्राणां/छात्रेषु वा रामः पटुतमः ।
- गच्छती/गच्छत्सु वा धावन् शीघ्रः ।

(3) यस्य च भावेन भावलक्षणम् -

जब एक क्रिया के बाद दूसरी क्रिया होती है तब पूर्वकर्ता और पूर्वक्रिया में सप्तमी विभक्ति होती है।

- रामे वनं गते दशरथः प्राणान् अत्यजत् ।

यहाँ राम का वन गमन प्रथम क्रिया हुई तथा दशरथ का मरना दूसरी क्रिया हुई। अतः प्रथम कर्ता राम में सप्तमी विभक्ति हुई है।

- सूर्ये उदिते कमलं विकसति ।
- ब्रह्मणेषु अधीयानेषु गतः।

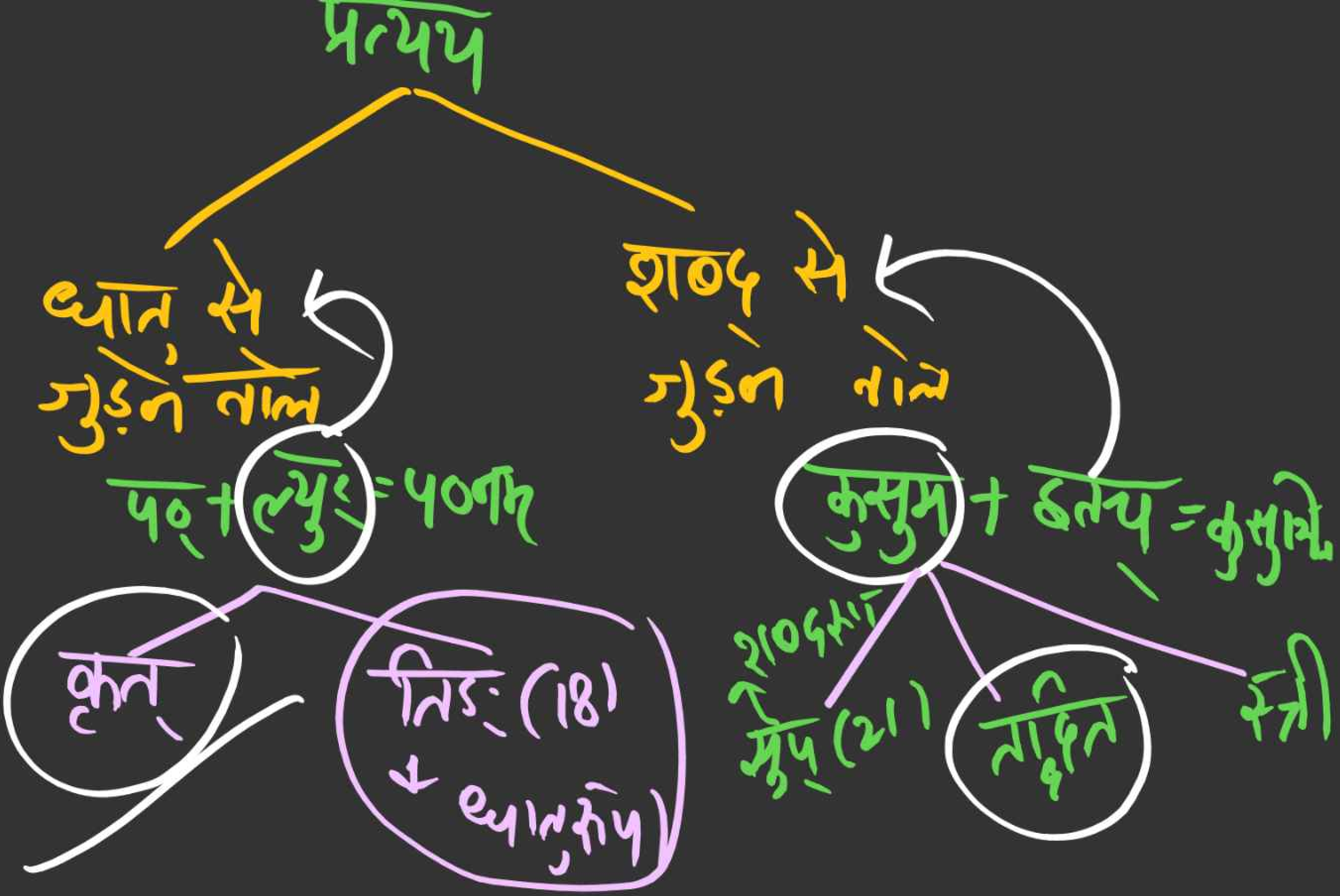
प्रत्यय
धातु से जुड़ने वाले
शब्द से जुड़ने वाले
पठ् + ल्युट् = पठन
कुसुम + कल्प = कुसुमकल्प
कृत्
तिङ् (18)
धातुरूप
शब्दरूप
सुप् (21)
तद्धित
स्त्री

कृत् + अन्त = कृदन्त

अव्यय / अविकारी,

प्रस्थाय / प्रसृत्वा

- क्त्वा = त्वा
- ल्यप् = वि + ज्ञा + ल्यप् = विज्ञाय, प्रदाय, अवतीर्य
- तुमुन् = पठितुम्, खादितुं, गन्तुं

के, लि.

दृष्ट्वा

1) क्त्वा
2) त्वा — ज्ञा + क्त्वा
3) ता — ज्ञात्वा
4) ट्वा

रामः पठति लिखति
रामः पठित्वा लिखति
अहं गत्वा आगच्छामि

- सर्वेषु शयानेषु कमला रोदिति।

(सबके सो जाने पर कमला रोती है।)

- सूर्ये अस्तं गते सर्वे बालकाः गृहम् अगच्छन् ।